ऊँ जय जय श्री राधे ऊँ

देवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे, दैवज्ञे भेषजे गुरौ।

यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी।।

भवानी शंकरौ वन्दे, श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।

याभ्यां विना न पश्यन्ति, सिद्धाः स्वातःस्थमीश्वरम्।।

श्रीराधा जी के परम भक्त कवि श्री कालिका प्रसाद शुक्ल जी अपने महाकाव्य "श्रीराधा चरित महाकाव्यम्" के प्रथम सर्ग में श्री राधा जी की भक्ति भावपूर्वक स्तुति करते हुए इस प्रकार नमस्कार करते हैं–

नमोवाक्

(आचार्य शुक्ल कृत)

देहप्रभाविजितचम्पककम्रताकां

दीव्यन्मरीचिमुखमार्जितशारदाब्जाम्।

नेत्राभिपीतनलिनीकमनीयताकां

कृष्णप्रियां भवहराय नमामि राधाम्।। श्रीराधाचरितमहाकाव्यम्– 1/34

बिम्बाधरां कुटिलकुन्तलभूषितास्यां

काञ्चीकलापकमनीयकुमुद्वतीकाम्।

मञ्जीरमण्डितमनोहर पादपद्मां

भक्त्या नमामि वृषभानुसुतां ललामाम्।। श्रीराधाचरितमहाकाव्यम्–1/35

चीनांशुकाञ्चललसद्भुजपार्श्वभागां

दीव्यद्द्विजावलिविमर्दितऋक्षमालाम्।

मुक्तावलीकलितकान्तभुजान्तरालां।

राधां नमामि शिवदां भवभीतिबाधाम्।। श्रीराधाचरित महाकाव्यम् 1/36

मन्दारमाल्यकबरीजितपूर्णचन्द्रां

मन्दस्मितां बकुलचम्पककुन्दमालाम्।

ताटङ्कताडितकपोलसुपाटलास्यां

मूर्ध्ना नमामि मधुसूदनराध्यराधाम्।। श्रीराधाचरित महाकाव्यम् 1/37

शृङ्गारसिन्धुलतिकां नवनीतकायां

सिन्दूरबिन्दुरविबिम्बविभातभालाम्।

कैयूरमौक्तिकविभावितबाहुभागां

राधां नमामि सततं वरसानुराकाम्।।1/38

दिव्याङ्गनाव्यजनचञ्चलचारुचेलां

शश्वद्विलासिनवयौवनकान्तदेहाम्।

गोपाङ्गनाविहितमण्डलरासमुख्यां

राधां नमामि वसुधातलकल्पवल्लीभ्।।1/39[1]

मम अन्तःप्रेरिका श्री राधा एवं प्रेरितवती–

(कुरु सखि हे कर्मतत्, राधानाम भजनकम्।

जीवनमपीदं सिद्धं चतुर्वर्गस्य साधकम्।। स्वयंकृत।।

अथमाङ्गलिकम्

श्री राधासहस्रनाम स्तोत्रम्

(राधारहस्यमितिग्रन्थात्संकलितम्)

श्री पार्वत्युवाच–

देव देव जगन्नाथ भक्तानुग्रह कारक।

यद्यस्ति मयि कारुण्यं यद्यस्ति मयि ते दया।। 1।।

त्वया न गदितं यत्तु यस्मै कस्मै कदाचन।

तस्मात् कथयदेवेश सहस्रंनाम चोत्तमम्।।2।।

श्री राधाया महादेव्यागोप्या भक्तिप्रसाधनम्।

---

[1] *श्रीकालिका प्रसाद शुक्ल कृत "श्रीराधा चरित महाकाव्यम्" से उद्धृत श्लोक क्रमांक (1/34–39)*

ब्रह्माण्डकर्त्री हर्त्री सा कथं गोपीत्वमागता।। 3।।

श्री महादेव उवाच–

शृणु देविविचित्रार्थां कथां पापहरां शुभाम्।
नास्तिजन्मानि कर्माणि तस्या नूनं महेश्वरि।।1।।
यदा हरिश्चरित्राणि कुरुते कार्यगौरवात्।
तदा विधत्ते रूपाणि हरिसांनिध्यसाधिनी।।2।।
तस्या गोपीत्व भावस्य कारणं गदितं पुरा।
इदानीं शृणु देवेशिनाम्नां चैवसहस्रकम्।।3।।
यन्मया कथितं नैव तन्त्रेष्वपि कदाचन।
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि भक्त्या धार्यं मुमुक्षुभिः।।4।।
मम प्राणसमाविद्या भाव्यते मे त्वहर्निशम्।
शृणुष्व गिरिजेनित्यं पठस्व च यथामति।।5।।
यस्याः प्रसादात् कृष्णस्तु गोलोकेशः परः प्रभुः।
अस्या नाम सहस्रस्य ऋषिर्नारद एव च।।6।।
देवी राधा परा प्रोक्ता चतुर्वर्गप्रसाधिनी।।

अथ सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्री राधा राधिका कृष्णवल्लभा कृष्णसंयुता।
वृन्दावनेश्वरी कृष्णप्रिया मदनमोहिनी।।1।।
श्रीमती कृष्णकान्ता च कृष्णानन्द प्रदायिनी।
यशस्विनी यशोगम्या यशोदानन्दवल्लभा।।2।।
दामोदरप्रियागोपी गोपानन्दकरी तथा।
कृष्णाङ्गवासिनी हृद्या हरिकान्ता हरिप्रिया।।3।।
प्रधानगोपिका गोपकन्या त्रैलोक्य सुन्दरी।
वृन्दावन विहारिणी विकसितमुखाम्बुजा।।4।।

गोकुलानन्दकर्त्री च गोकुलानन्ददायिनी।
गति प्रदा गीतगम्या गमनागमनप्रिया।।5।।
विष्णुप्रिया विष्णुकान्ता विष्णोरङ्कनिवासनी।
यशोदानन्दपत्नी च यशोदानन्दगेहिनी।।6।।
कामारिकान्ता कामेशी कामलालसविग्रहा।
जयप्रदा जया जीवा जीवानन्दप्रदायिनी।।7।।
नन्दनन्दनपत्नी च वृषभानुसुता शिवा।
गणाध्यक्षा गवाध्यक्षा गवां गतिरनुत्तमा।।8।।
काञ्चनाभा हेमगात्रा काञ्चनाङ्गदधारिणी।
अशोका शोकरहिता विशोका शोकनाशिनी।।9।।
गायत्री वेदमाता च वेदातीता विदुत्तमा।
नीतिशास्त्रप्रिया नीतिर्गतिर्मतिरभीष्टदा।। 10।।
वेदप्रिया वेदगर्भा वेदमार्गप्रवर्द्धिनी।
वेदगम्या वेदपरा विचित्रकनकोज्ज्वला।।11।।
तथोज्ज्वलप्रदानित्या तथैवोज्ज्वलगात्रिका।
नन्दप्रिया नन्दसुताराध्याऽऽनन्दप्रदा शुभा।।12।।
शुभाङ्गी विमलाङ्गी च विलासिन्यपराजिता।
जननी जन्मशून्या च जन्ममृत्युजरापहा।।13।।
गतिर्गतिमतां धात्री धात्र्यानन्दप्रदायिनी।
जगन्नाथ प्रिया शैलवासिनी हेमसुन्दरी।।14।।
किशोरी कमला पद्मा पद्महस्ता पयोददा।
पयस्विनी पयोदात्रीपवित्री सर्वमङ्गला।।15।।
महाजीवप्रदा कृष्णकान्ता कमलसुन्दरी।
विचित्रवासिनी चित्रवासिनी चित्ररूपिणी।।16।।

निर्गुणा सुकुलीना च निष्कुलीना निराकुला।
गोकुलान्तरगेहा च योगानन्दकरी तथा।।17।।
वेणुवाद्या वेणुरतिर्वेणुवाद्यपरायणा।
गोपालस्यप्रिया सौम्यरूपासौम्यकुलोद्वहा।।18।।
मोहामोहा विमोहा च गतिनिष्ठा गतिप्रदा।
गीर्वाणवन्द्या गीर्वाणा गीर्वाणगणसेविता।।19।।
ललिता च विशोका च विशाखा चित्रमालिनी।
जितेन्द्रिया शुद्धसत्त्वा कुलीना कुलदीपिका।।20।।
दीपप्रिया दीपदात्री विमला विमलोदका।
कान्तारवासिनी कृष्णा कृष्णचन्द्रप्रिया मतिः।।21।।
अनुत्तरा दुःख हन्त्री दुःखकर्त्री कुलोद्वहा।
मतिर्लक्ष्मीर्धृतिर्लज्जा कान्तिः पुष्टिः स्मृतिः क्षमा।।22।।
क्षीरोदशायिनी देवी देवारिकुलमर्दिनी।
वैष्णवी च महालक्ष्मीः कुलपूज्या कुलप्रिया।।23।।
संहर्त्री सर्वदैत्यानां सावित्री वेदगामिनी।
वेदातीता निरालम्बा निरालम्बगणप्रिया।।24।।
निरालम्बजनैः पूज्या निरालोकानिराश्रया।
एकाङ्गी सर्वगा सेव्या ब्रह्मपत्नी सरस्वती।।25।।
रासप्रिया रास गम्या रासाधिष्ठातृदेवता।
रसिका रसिकानन्दा स्वयं रासेश्वरी परा।।26।।
रासमण्डल मध्यस्था रासमण्डलशोभिता।
रासमण्डलसेव्या च रासक्रीडामनोहरा।।27।।
पुण्डरीकाक्षनिलया पुण्डरीकाक्षगेहिनी।
पुण्डरीकाक्षसेव्या च पुण्डरीकाक्षवल्लभा।।28।।

सर्वजीवेश्वरी सर्वजीववन्द्या परात्परा।
प्रकृतिः शम्भुकान्ता च सदाशिवमनोहरा।।29।।
क्षुत् पिपासा दया निद्रा भ्रान्तिः श्रान्तिः क्षमाकुला।
वधूरूपा गोपपत्नी भारती सिद्धयोगिनी।।30।।
सत्यरूपा नित्यरूपा नित्याङ्गी नित्यगेहिनी।
स्थानदात्री तथा धात्री महालक्ष्मीः स्वयंप्रभा।।31।।
सिन्धुकन्याऽऽस्थानदात्री द्वारकावासिनी तथा।
बुद्धिः स्थितिः स्थानरूपा सर्वकारणकारणा।।32।।
भक्तप्रिया भक्तगम्या भक्तानन्दप्रदायिनी।
भक्तकल्पद्रुमातीता तथातीतगुणा तथा।।33।।
मनोऽधिष्ठातृदेवी च कृष्णप्रेमपरायणा।
निरामया सौम्यदात्री तथा मदनमोहिनी।।34।।
एकानंशाशिवा क्षेमा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।
ईश्वरी सर्ववन्द्या च गोपनीया शुभङ्करी।।35।।
पालिनी सर्वभूतानां तथा कामाङ्गहारिणी।
सद्यो मुक्तिप्रदा देवी वेदसारा परात्परा।।36।।
हिमालयसुतासर्वा पार्वतीगिरिजा सती।
दक्षकन्या देवमाता मन्दलज्जा हरेस्तनूः।।37।।
वृन्दारण्यप्रिया वृन्दा वृन्दावनविलासिनी।
विलासिनी वैष्णवी च ब्रह्मलोकप्रतिष्ठिता।।38।।
रुक्मिणी रेवती सत्यभामा जाम्बवती तथा।
सुलक्ष्मणा मित्रविन्दा कालिन्दी जह्नुकन्यका।।39।।
परिपूर्णा पूर्णतरा तथा हैमवती गतिः।
अपूर्वा ब्रह्मरूपा च ब्रह्माण्डपरिपालिनी।।40।।

ब्रह्माण्डभाण्डमध्यस्था ब्रह्माण्डभाण्डरूपिणी ।
अण्डरूपाण्डमध्यस्था तथाण्डपरिपालिनी ।।41 ।
अण्डबाह्याण्डसंहर्त्री शिवब्रह्महरिप्रिया ।
महाविष्णुप्रिया कल्पवृक्षरूपा निरन्तरा ।।42 ।।
सारभूता स्थिता गौरी गौराङ्गी शशिशेखरा ।
श्वेतचम्पकवर्णाभा शशिकोटिसमप्रभा ।।43 ।।
मालतीमाल्यभूषाढ्या मालतीमाल्यधारिणी ।
कृष्णस्तुता कृष्णकान्ता वृन्दावनविलासिनी ।।44 ।।
तुलस्यधिष्ठातृ देवी संसारार्णवपारदा ।
सारदाऽऽहारदाम्भोदा यशोदा गोपनन्दिनी ।।45 ।।
अतीतगमना गौरी परानुग्रह कारिणी ।
करुणार्णवसम्पूर्णा करुणार्णव धारिणी ।।46 ।।
माधवी माधव मनोहारिणी श्यामवल्लभा ।
अन्धकारभयध्वस्ता मङ्गल्या मङ्गलप्रदा ।।47 ।।
श्रीगर्भा श्रीप्रदा श्रीशा श्रीनिवासाच्युतप्रभा ।
श्रीरूपा श्रीहरा श्रीदा श्रीकामा श्रीस्वरूपिणी ।।48 ।।
श्रीदामानन्ददात्री च श्रीदामेश्वरवल्लभा ।
श्रीनितम्बा श्रीगणेशा श्रीस्वरूपाश्रिता श्रुतिः ।।49 ।।
श्रीक्रियारूपिणी श्रीला श्रीकृष्णभजनान्विता ।
श्रीराधा श्रीमती श्रेष्ठा श्रेष्ठरूपा श्रुतिप्रिया ।।50 ।।
योगेशी योगमाता च योगातीता युगप्रिया ।
योगप्रिया योगगम्या योगिनीगणवन्दिता ।।51 ।।
जवाकुसुमसंकाशा दाडिमीकुसुमोपमा ।
नीलाम्बरधरा धीरा धैर्यरूपधरा धृतिः ।।52 ।।

रत्नसिंहासनस्था च रत्नकुण्डलभूषिता।
रत्नालङ्कारसंयुक्ता रत्नमालाधरा परा।।53।।
रत्नेन्द्रसारहाराढ्या रत्नमालाविभूषिता।
इन्द्रनीलमणिन्यस्तपादपद्मशुभा शुचिः।।54।।
कार्तिकी पौर्णमासी च अमावस्या भयापहा।
गोविन्दराजगृहिणी गोविन्दगणपूजिता।।55।।
वैकुण्ठनाथगृहिणी वैकुण्ठपरमालया।
वैकुण्ठदेवदेवाढ्या तथा वैकुण्ठसुन्दरी।।56।।
मदालसा वेदवती सीता साध्वी पतिव्रता।
अन्नपूर्णा सदानन्दरूपा कैवल्य सुन्दरी।।57।।
कैवल्यदायिनी श्रेष्ठा गोपीनाथ मनोहरा।
गोपीनाथेश्वरी चण्डी नायिकानयनान्विता।।58।।
नायिका नायकप्रीता, नायकानन्दरूपिणी।
शेषाशेषवती शेषरूपिणी जगदम्बिका।।59।।
गोपालपालिका माया जायाऽऽनन्दप्रदा तथा।
कुमारी यौवनानन्दा युवती गोपसुन्दरी।।60।।
गोपमाता जानकी च जनकानन्दकारिणी।
कैलासवासिनी रम्भा वैराग्यकुलदीपिका।।61।।
कमलाकान्तगृहिणी कमला कमलालया।
त्रैलोक्यमाता जगतामधिष्ठात्री प्रियाम्बिका।।62।।
हरकान्ता हररता हरानन्दप्रदायिनी।
हरपत्नी हरप्रीता हरतोषण तत्परा।।63।।
हरेश्वरी रामरता रामा रामेश्वरी रमा।
श्यामला चित्रलेखा च तथा भुवनमोहिनी।।64।।

सुगोपिगोपवनिता गोपराज्यप्रदा शुभा।
अङ्गार पूर्णा माहेयीमत्स्यराजसुता सती।।65।।
कौमारी नारसिंही च वराही नवदुर्गिका।
चञ्चलाचञ्चलामोदा नारी भुवनसुन्दरी।।66।।
दक्षयज्ञहरा दाक्षी दक्षकन्या सुलोचना।
रतिरूपा रतिप्रीता रतिश्रेष्ठा रतिप्रदा।।67।।
रतिलक्षण गेहस्था विरजा भुवनेश्वरी।
शंङ्कास्पदा हरेर्जाया जामातृकुलवन्दिता।।68।।
वकुला वकुलामोदधारिणी यमुनाजया।
विजया जयपत्नी च यमलार्जुनभञ्जिनी।।69।।
वक्रेश्वरी वक्ररूपा वक्रवीक्षणवीक्षिता।
अपराजिता जगन्नाथा जगन्नाथेश्वरी यतिः।।70।।
खेचरी खेचरसुता खेचरत्वप्रदायिनी।
विष्णुवक्षःस्थलस्था च विष्णु भावनतत्परा।।71।।
चन्द्रकोटिसुगात्री च चन्द्राननमनोहरा।
सेवा सेव्या शिवा क्षेमा तथा क्षेमकरी वधूः।।72।।
यादवेन्द्रवधूः शैव्या शिवभक्ता शिवान्विता।
केवला निष्कला सूक्ष्मा महाभीमाभयप्रदा।।73।।
जीमूतरूपा जैमूती जितामित्रप्रमोदिनी।
गोपालवनिता नन्दा कुलजेन्द्रनिवासिनी।।74।।
जयन्ती यमुनाङ्गी च यमुनातोषकारिणी।
कलिकल्मषभङ्गा च कलिकल्मषनाशिनी।।75।।
कलिकल्मषरूपा च नित्यानन्दकरी कृपा।
कृपावती कुलवती कैलासाचलवासिनी।।76।।

वामदेवी वामभागा गोविन्दप्रियकारिणी।
नरेन्द्रकन्या योगेशी योगिनी योगरूपिणी।।77।।
योगसिद्धा सिद्धरूपा सिद्धक्षेत्रनिवासिनी।
क्षेत्राधिष्ठातृरूपा च क्षेत्रातीता कुलप्रदा।।78।।
केशवानन्ददात्री च केशवानन्ददायिनी।
केशवा केशवप्रीता केशवी केशवप्रिया।।79।।
रासक्रीडाकरी रासवासिनी राससुन्दरी।
गोकुलान्वितदेहा च गोकुलत्व प्रदायिनी।।80।।
लवङ्गनाम्नी नारङ्गी नारङ्गकुलमण्डना।
एलालवङ्गकर्पूर – मुखवासमुखान्विता।।81।।
मुख्या मुख्यप्रदामुख्यरूपा मुख्यनिवासिनी।
नारायणी कृपातीता करूणामयकारिणी।।82।।
कारुण्या करुणा कर्णा गोकर्णा नागकर्णिका।
सर्पिणी कौलिनी क्षेत्रवासिनी जगदन्वया।।83।।
जटिला कुटिला नीला नीलाम्बरधरा शुभा।
नीलाम्बरविधात्री च नीलकण्ठप्रिया तथा।।84।।
भगिनी भागिनी भोग्या कृष्णभोग्या भगेश्वरी।
बलेश्वरी बलाराध्या कान्ताकान्तनितम्बिनी।।85।।
नितम्बिनी रूपवती युवती कृष्णपीवरी।
विभावरी वेत्रवती संकटा कुटिलालका।।86।।
नारायणप्रिया शैला सृक्कणीपरिमोहिता।
दृक्पातमोहिता प्रातराशिनी नवनीतिका।।87।।
नवीना नवनारी च नारङ्गफलशोभिता।
हैमी हेममुखी चन्द्रमुखी शशिसुशोभना।।88।।

अर्द्धचन्द्रधरा चन्द्रवल्लभारोहिणी तमि:
तिमिंगिलकुलामोदमत्स्य—रूपाङ्गहारिणी।।89।।
कारिणी सर्वभूतानां कार्यातीता किशोरिणी।
किशोरवल्लभा केशकारिका कामकारिका।।90।।
कामेश्वरी कामकला कालिन्दीकूलदीपिका।
कलिन्दतनयातीरवासिनी तीरगेहिनी।।91।
कादम्बरीपानपरा कुसुमामोदधारिणी।
कुमुदा कुमुदानन्दा कृष्णेशी कामवल्लभा।।92।।
तर्काली वैजयन्ती च निम्बदाडिम्बरूपिणी।
बिल्ववृक्षप्रिया कृष्णाम्बरा बिल्वोपमस्तनी।।93।।
बिल्वात्मिका बिल्वबसुर्बिल्ववृक्षनिवासिनी।
तुलसीतोषिका तैतिलानन्दपरितोषिका।।94।।
गजमुक्ता महामुक्ता महामुक्तिफलप्रदा।
अनङ्गमोहिनी शक्तिरूपा शक्तिस्वरूपिणी।।95।।
पञ्चशक्तिस्वरूपा च शैशवानन्दकारिणी।
गजेन्द्रगामिनी श्यामलतानङ्गलता तथा।।96।।
योषिच्छक्तिस्वरूपाच योषिदानन्दकारिणी।
प्रेमप्रिया प्रेमरूपा प्रेमानन्दतरङ्गिणी।।97।।
प्रेमहारा प्रेमदात्री प्रेमशक्तिमयी तथा।
कृष्णप्रेमवती धन्या कृष्णप्रेमतरङ्गिणी।।98।।
प्रेमभक्तिप्रदा प्रेमा प्रेमानन्दतरङ्गिणी।
प्रेमक्रीडापरीताङ्गी प्रेमभक्तितरङ्गिणी।।99।।
प्रेमार्थदायिनी सर्वश्वेता नित्य तरङ्गिणी।
हावभावान्विता रौद्रा रुद्रानन्दप्रकाशिनी।।100।।

कपिला शृङ्खला केशपाशसम्बन्धिनी धटी।
कुटीरवासिनी धूम्रा धम्रूकेशा जलोदरी।।101।।
ब्रह्माण्डगोचरा ब्रह्मस्वरूपिणी भवभाविनी।
संसारनाशिनी शैवा शैवलानन्ददायिनी।।102।।
शिशिरा हेमरागाढ्या मेघरूपातिसुन्दरी।
मनोरमा वेगवती वेगाढ्या वेदवादिनी।।103।।
दयान्विता दयाधारा दयारूपा सुसेविनी।
किशोरसङ्गसंसर्गा गौरचन्द्रानना कला।।104।।
कलाधिनाथवदना कलानाथाधिरोहिणी।
विरागकुशला हेमपिङ्गला हेममण्डना।।105।।
भाण्डीरतालवनगा कैवर्ती पीवरी शुकी।
शुकदेवगुणातीता शुकदेवप्रियासखी।।106।।
विकलोत्कर्षिणी कोषाकौशेयाम्बरधारिणी।
कौषावरी कोषरूपा जगदुत्पत्ति कारिका।।107।।
सृष्टिस्थितिकरी संहारिणी संहारकारिणी।
केशशैवलधात्री च चन्द्रगात्रा सुकोमला।।108।।
पद्माङ्गरागसंरागा विन्ध्याद्रिपरिवासिनी।
विन्ध्यालया श्यामसखी सखीसंसाररागिणी।।109।।
भूता भविष्या भव्या च भव्यगात्रा भवातिगा।
भवनाशान्तकारिण्याकाशरूपा सुवेशिनी।।110।।
रतिरङ्गपरित्यागा रतिवेगा रतिप्रदा।
तेजस्विनी तेजोरूपा कैवल्यपथदा शुभा।।111।।
भक्तिहेतुर्मुक्तिहेतुर्लङ्घिनी लङ्घनक्षमा।
विशालनेत्रा वैशाली विशालकुलसम्भवा।।112।।

विशालगृहवासाच विशालबदरीरतिः।
भक्त्यतीता भक्तिगतिर्भक्तिका शिवभक्तिदा।।113।।
शिवभक्ति स्वरूपा च शिवार्द्धाङ्गविहारिणी।
शिरीषकुसुमामोदा शिरीषकुसुमोज्ज्वला।।114।।
शिरीषमृद्धी शैरीषी शिरीषकुसुमाकृतिः।
वामाङ्गहारिणी विष्णोः शिवभक्तिसुखान्विता।।115।।
विजिता विजितामोदागणगा गणतोषिता।
हयास्याहेरम्बसुतागणमाता सुखेश्वरी।।116।।
दुःखहन्त्री दुःखहरा सेवितेप्सितसर्वदा।
सर्वज्ञत्वविधात्री च कुलक्षेत्र निवासिनी।।117।।
लवङ्गा पाण्डवसखी सखीमध्यनिवासिनी।
ग्राम्यगीता गया गम्या गमनातीतनिर्भरा।।118।।
सर्वाङ्गसुन्दरी गङ्गा गङ्गाजलमया तथा।
गङ्गेरिता पूतगात्रा पवित्रकुलदीपिका।।119।।
पवित्रगुणशीलाढ्या पवित्रानन्ददायिनी।
पवित्रगुणसीमाढ्या पवित्रकुलदीपिनी।।120।।
कल्पमाना कंसहरा विन्ध्याचलनिवासिनी।
गोवर्द्धनेश्वरी गोवर्द्धनहास्या हयाकृतिः।।121।।
मीनावतारा मीनेशी गगनेशी हया गजी।
हरिणी हारिणी हारधारिणी कनकाकृतिः।।122।।
विद्युतप्रभा विप्रमाता गोपमाता गयेश्वरी।
गवेश्वरी गवेशी च गवीशी गतिवासिनी।।123।।
गतिज्ञा गीतकुशला दनुजेन्द्रनिवारिणी।
निर्वाणधात्री नैर्वाणी हेतुयुक्ता गयोत्तरा।।124।।

पर्वताधिनिवासाच निवासकुशला तथा।
संन्यासधर्मकुशला संन्यासेशी शरन्मुखी।।25।।
शरच्चन्द्रमुखी श्यामहारा क्षेत्रनिवासिनी।
वसन्तरागसंरागा वसन्तवसनाकृतिः।।126।।
चतुर्भुजा षड्भुजा च द्विभुजा गौरविग्रहा।
सहस्रास्या विहास्या च मुद्रास्या मुददायिनी।।127।।
प्राणप्रिया प्राणरूपा प्राणरूपिण्यपावृता।
कृष्णप्रीता कृष्णरता कृष्णतोषणतत्परा।।128।।
कृष्णप्रेमरता कृष्णभक्ता भक्तफलप्रदा।
कृष्णप्रेमा प्रेमभक्ता हरिभक्तिप्रदायिनी।।129।।
चैतन्यरूपा चैतन्यप्रिया चैतन्यरूपिणी।
उग्ररूपा शिवक्रोडा कृष्णक्रोडा जलोदरी।। 130।।
महोदरी महादुर्गकान्तारसुस्थवासिनी।
चन्द्रावली चन्द्रकेशी चन्द्रप्रेमतरङ्गिणी।।131।।
समुद्रमथनोद्भूता समुद्रजलवासिनी।
समुद्रामृतरूपा च समुद्रजलवासिका।।132।।
केशपाशरता निद्रा क्षुधा प्रेमतरङ्गिका।
दूर्वादलश्यामतनुर्दूर्वादलतनुच्छविः।।133।।
नागरी नागरारागा नागरानन्दकारिणी।
नागरालिङ्गनपरा नागराङ्गणमङ्गला।।134।।
उच्चनीचा हैमवतीप्रिया कृष्णतरङ्गदा।
प्रेमालिङ्गनसिद्धाङ्गी सिद्धसाध्यविलासिका।।135।।
मङ्गलामोदजननी मेखलामोदधारिणी।
रत्नमञ्जीरभूषाङ्गी रत्नभूषणभूषणा।।136।।

जम्बालमालिका कृष्णप्राणा प्राणविमोचना।
सत्यप्रदा सत्यवती सेवकानन्ददायिका।।137।।
जगद्योनिर्जगद्बीजा विचित्रमणिभूषणा।
राधारमणकान्ता च राध्या राधनरूपिणी।।138।।
कैलासवासिनी कृष्णप्राणसर्वस्वदायिनी।
कृष्णावतारनिरता कृष्णभक्तफलार्थिनी।।139।।
याचका याचकानन्दकारिणी याचकोज्ज्वला।
हरिभूषण भूषाढ्याऽऽनन्दयुक्ताऽऽर्द्रपादगा।।140।।
है–है–तालधरा थै–थै – शब्दशक्तिप्रकाशिनी।
हे–हे–शब्दस्वरूपाच ही – ही – वाक्यविशारदा।।141।।
जगदानन्दीकर्त्री च सान्द्रानन्दविशारदा।
पण्डिता पण्डितगुणा पण्डितानन्दकारिणी।।142।।
परिपालनकर्त्री च तथा स्थिति विनोदिनी।
तथा संहारशब्दाढ्या विद्वज्जनमनोहरा।।143।।
विदुषां प्रीतिजननी विद्वत्प्रेमविवर्द्धिनी।
नादेशी नादरूपा च नादबिन्दुविधारिणी।।144।।
शून्यस्थानस्थिता शून्यरूपपादपवासिनी।
कार्तिकव्रतकर्त्री च वसनाहारिणी तथा।।145।।
जलाशया जलतला शिलातलनिवासिनी।
क्षुद्रकीटाङ्गसंसर्गा सङ्गदोषविनाशिनी।।146।।
कोटिकन्दर्पलावण्या कोटिकन्दर्पसुन्दरी।
कन्दर्पकोटिजननी कामबीजप्रदायिनी।।147।।
कामशास्त्रविनोदा च कामशास्त्रप्रकाशिनी।
कामप्रकाशिका कामिन्यणिमाद्यष्टसिद्धिदा।।148।।

यामिनी यामिनीनाथवदना यामिनीश्वरी।
यागयोगहरा भुक्तिमुक्तिदात्री हिरण्यदा।।149।।
कपालमालिनी देवी धामरूपिण्यपूर्वदा।
कृपान्विता गुणागौण्या गुणातीतफलप्रदा।।150।।
कूष्माण्डभूतवेतालनाशिनी शरदान्विता।
शीतला शबला हेला लीला लावण्यमङ्गला।।151।।
विद्यार्थिनी विद्यमाना विद्या विद्यास्वरूपिणी।
आन्वीक्षिकीशास्त्ररूपा शास्त्रसिद्धान्तकारिणी।।152।।
नागेन्द्रा नागमाता च क्रीड़ाकौतुकरूपिणी।
हरिभावनशीला च हरितोषणतत्परा।।153।।
हरिप्राणा हर प्राणा शिवप्राणा शिवान्विता।
नरकार्णवसंहर्त्री नरकार्णवविनाशिनी।। 154।।
नरेश्वरी नरातीता नरसेव्या नराङ्गना।
यशोदानन्दनप्राणवल्लभा हरिवल्लभा।।155।।
यशोदानन्दनारम्या यशोदानन्दनेश्वरी।
यशोदानन्दनाक्रीडा यशोदाक्रोडवासिनी।।156।।
यशोदानन्दन प्राणा यशोदानन्दनार्थदा।
वत्सला कोशला काला करुणार्णवरूपिणी।।157।।
स्वर्गलक्ष्मीर्भूमिलक्ष्मीर्द्रोपदी पाण्डवप्रिया।
तथार्जुनसखी भौमी भैमी भीमकुलोद्भवा।।158।।
भुवनामोहना क्षीणा पानासक्ततरा तथा।
पानार्थिनी पानपात्रा पानपानन्ददायिनी।।159।।
दुग्धमन्थनकर्माढ्या दधिमन्थनतत्परा।
दधिभाण्डार्थिनी कृष्णक्रोधिनी नन्दनाङ्गना।।160।।

घृतलिप्ता तक्रयुक्ता यमुनापारकौतुका।
विचित्रकथका कृष्णहास्यभाषणतत्परा।।161।।
गोपाङ्गनावेष्टिता च कृष्णसङ्गार्थिनी तथा।
रासासक्ता रासरतिरासवासक्तवासना।।162।।
हरिद्रा हारिता हारिण्यानन्दार्पितचेतना।
निश्चैतन्या च निश्चेता तथा दारुहरिद्रिका।।163।।
सुबलस्य स्वसा कृष्णभार्या भाषातिवेगिनी।
श्रीदामस्य सखी दामदामिनी दामधारिणी।।164।।
कैलासिनी केशिनी च हरिदम्बरधारिणी।
हरिसांनिध्यदात्री च हरिकौतुकमङ्गला।।165।।
हरिप्रदा हरिद्वारा यमुनाजलवासिनी।
जैत्रप्रदा जितार्थी च चतुरा चातुरी तमी।।166।।
तमिस्राऽऽतपरूपा च रौद्ररूपा यशोऽर्थिनी।
कृष्णार्थिनी कृष्णकला कृष्णानन्दविधायिनी।।167।।
कृष्णार्थवासना कृष्णरागिणी भवभाविनी।
कृष्णार्थरहिता भक्ता भक्तभक्तिशुभप्रदा।।168।।
श्रीकृष्णरहिता दीना तथा विरहिणी हरेः।
मथुरा–मथुराराजगेहभावनभावना।।169।।
अलकेश्वरपूज्या च कुबेरेश्वरवल्लभा।
धनधान्यविधात्री च जाया काया हया हयी।।170।।
प्रणवा प्रणवेशी च प्रणवार्थस्वरूपिणी।
ब्रह्मविष्णुशिवार्धाङ्ग हारिणी शैवशिंशपा।।171।।
राक्षसीनाशिनी भूतप्रेतप्राणविनाशिनी।
सकलेप्सितदात्री च शची साध्वी अरुन्धती।।172।।

पतिव्रता पतिप्राणा पतिवाक्य विनोदिनी।
अशेषासाधिनी कल्पवासिनी कल्परूपिणी।।173।।

इत्येतत् कथितं देवि राधानामसहस्रकम्।
यः पठेत् पाठयेद्वापि तस्य तुष्यति माधवः।।174।।
एकादश्यां शुचिर्भूत्वा यः पठेत् सुसमाहितः।
तस्य सर्वार्थसिद्धिःस्यात् शृणुयाद्वा सुशोभने।।175।।
ब्रह्मवैवर्तपुराण में श्री राधा जी की प्रार्थना करते हुए उद्धव जी कहते हैं कि
—

"त्वमेव राधा त्वं कृष्णस्त्वं पुमान् प्रकृतिः परा।
राधामाधवयोर्भेदो न पुराणे श्रुतौ तथा।।"

!! इति !!

राधाकृतं श्रीकृष्णस्तोत्रम्

(कृष्णरहस्यमिति ग्रन्थात्संकलितम्)

गोलोकनाथ गोपीश मदीश प्राणवल्लभ।
हे दीनबन्धो दीनेश सर्वेश्वर नमोऽस्तुते।।1।।
गोपेश गोसमूहेश यशोदानन्दवर्धन।
नन्दात्मज सदानन्द नित्यानन्द नमोऽस्तु ते।।2।।
शतमन्योर्मन्युभग्न ब्रह्मदर्पविनाशक।
कालीयदमन प्राणनाथ कृष्ण नमोऽस्तुते।।3।।
शिवानन्तेश ब्रह्मेश ब्राह्मणेश परात्पर।
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मबीज नमोऽस्तुते।।4।।
चराचरतरोर्बीज गुणातीत गुणात्मक।

गुणबीज गुणाधार गुणेश्वर नमोऽस्तुते।।5।।

अणिमादिकसिद्धीश सिद्धेः सिद्धिस्वरूपक।

तपस्तपस्विंस्तपसां बीजरूप नमोऽस्तु ते।।6।।

यदनिर्वचनीयं च वस्तु निर्वचनीयकम्।

तत्स्वरूप तयोर्बीज सर्वबीज नमोऽस्तु ते।।7।।

अहं सरस्वती लक्ष्मीर्दुर्गागङ्गा श्रुतिप्रसूः।

यस्य पादार्चनान्नित्यं पूज्या तस्मै नमो नमः।।8।।

स्पर्शने यस्य भृत्यानां ध्याने चापि दिवानिशम्।

पवित्राणि च तीर्थानि तस्मै भगवते नमः।।9।।

इत्येवमुक्त्वा सा देवीजले संन्यस्य विग्रहम्।

मनः प्राणांश्च श्री कृष्णे तस्थौ स्थाणुसमा सती।।10।।

राधाकृतं हरेः स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।

हरिभक्तिं च दास्यं च लभेद्राधागतिं ध्रुवम्।।11।।

विपतौ यः पठेद्भक्त्या सद्यः सम्पत्तिमाप्नुयात्।

चिरकालगतं द्रव्यं हृतंनष्टं च लभ्यते।।12।।

बन्धुवृद्धिर्भवेत्तस्य प्रसन्नं मानसं परम्।

चिन्ताग्रस्तः पठेद्भक्त्या परां निर्वृतिमाप्नुयात्।।13।।

पतिभेदे पुत्रभेदे मित्र भेदे च संकटे।

मासं भक्त्या यदिपठेत्सद्यः सदर्शनं लभेत्।।14।।

भक्त्या कुमारी स्तोत्रं च शृणुयाद् वत्सरं यदि।

श्रीकृष्णसदृशं कान्तं गुणवन्तं लभेद् ध्रुवम्।।15।।

!! इति!!

राधाकृत इस श्रीकृष्ण स्तोत्र में भगवान् श्री कृष्ण को ब्रह्मस्वरूप, कालीयदमनकर्ता, ब्रह्मबीज तथा सर्वबीज कहकर प्रणाम किया गया है। इस स्तोत्र

का पाठ जो भी प्राणी तीनों कालों में करते हैं, वे कृष्ण की प्रीति को प्राप्त करते हैं। विपत्ति के समय इसका पाठ करने से विपत्ति का नाश होता है। सम्पत्ति के लिये इसका पाठ करने से सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। पूर्व समय में जो धन–सम्पत्ति नष्ट हो गई हो या दूसरे के हाथ में चली गई हो यदि साधक इस स्तोत्र का पाठ करता है तो उसे वह सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है। बान्धवों की वृद्धि के लिये, पति पुत्र व मित्र से मतभेद होने पर और अचानक संकट के आने पर यदि एक मास तक इसका पाठ किया जाए तो सभी प्रकार के कष्टों का निवारण होता है। यदि अविवाहिता कन्या इस स्तोत्र का श्रवण करती है तो उसे निःस्सन्देह श्री कृष्ण के सदृश गुणवान् पति की प्राप्ति होती है।

!! इति!!